श्री विष्णु सहस्रनाम

भगवान विष्णु के सहस्रनाम की व्याख्या

भाग - 7

व्याख्याकार

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त आश्रम प्रकाशन

www.vmission.org.in

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

इस पुस्तिका में भगवान विष्णु के
601 से 700 नाम तक की व्याख्या उपलब्ध है।

601. ॐ श्रीवत्सवक्षसे
602. ॐ श्रीवासाय
603. ॐ श्रीपतये
604. ॐ श्रीमतां वराय
605. ॐ श्रीदाय
606. ॐ श्रीशाय
607. ॐ श्रीनिवासाय
608. ॐ श्रीनिधये
609. ॐ श्रीविभावनाय
610. ॐ श्रीधराय
611. ॐ श्रीकराय
612. ॐ श्रेयसे
613. ॐ श्रीमते
614. ॐ लोकत्रयाश्रयाय
615. ॐ स्वक्षाय
616. ॐ स्वंगाय
617. ॐ शतानन्दाय
618. ॐ नन्दये
619. ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय
620. ॐ विजितात्मने
621. ॐ अविधेयात्मने
622. ॐ सत्कीर्तये
623. ॐ छिन्नसंशयाय
624. ॐ उदीर्णाय
625. ॐ सर्वतश्चक्षुषे
626. ॐ अनीशाय
627. ॐ शाश्वतस्थिराय
628. ॐ भूशयाय
629. ॐ भूषणाय
630. ॐ भूतये
631. ॐ विशोकाय
632. ॐ लोकनाशनाय
633. ॐ अर्चिष्मते
634. ॐ अर्चिताय
635. ॐ कुम्भाय
636. ॐ विशुद्धात्मने
637. ॐ विशोधनाय
638. ॐ अनिरुद्धाय
639. ॐ अप्रतिरथाय
640. ॐ प्रद्युम्नाय
641. ॐ अमितविक्रमाय
642. ॐ कालनेमिनिघ्ने
643. ॐ वीराय
644. ॐ शौरये
645. ॐ शूरजनेश्वराय
646. ॐ त्रिलोकात्मने

647. ॐ त्रिलोकेशाय नमः
648. ॐ केशवाय
649. ॐ केशिघ्ने
650. ॐ हरये
651. ॐ कामदेवाय
652. ॐ कामपालाय
653. ॐ कामिने
654. ॐ कान्ताय
655. ॐ कृतागमाय
656. ॐ अनिर्देश्यवपुषे
657. ॐ विष्णवे
658. ॐ वीराय
659. ॐ अनन्ताय
660. ॐ धनंजयाय
661. ॐ ब्रह्मण्याय
662. ॐ ब्रह्मकृते
663. ॐ ब्रह्मणे
664. ॐ ब्रह्मणे
665. ॐ ब्रह्मविवर्धनाय
666. ॐ ब्रह्मविदे
667. ॐ ब्राह्मणाय
668. ॐ ब्रह्मिणे
669. ॐ ब्रह्मज्ञाय
670. ॐ ब्राह्मणप्रियाय
671. ॐ महाक्रमाय
672. ॐ महाकर्मणे
673. ॐ महातेजसे
674. ॐ महोरगाय
675. ॐ महाक्रतवे
676. ॐ महायज्वने
677. ॐ महायज्ञाय
678. ॐ महाहविषे
679. ॐ स्तव्याय
680. ॐ स्तवप्रियाय
681. ॐ स्तोत्राय
682. ॐ स्तुतये
683. ॐ स्तोत्रे
684. ॐ रणप्रियाय
685. ॐ पूर्णाय
686. ॐ पूरयित्रे
687. ॐ पुण्याय
688. ॐ पुण्यकीर्तये
689. ॐ अनामयाय
690. ॐ मनोजवाय
691. ॐ तीर्थकराय
692. ॐ वसुरेतसे
693. ॐ वसुप्रदाय
694. ॐ वसुप्रदाय
695. ॐ वासुदेवाय
696. ॐ वसवे
697. ॐ वसुमनसे
698. ॐ हविषे
699. ॐ सद्गतये
700. ॐ सत्कृतये

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६०१ –

ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः

वक्षस्थल में श्रीवत्स के चिह्न से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is having Shreevatsa mark on Chest.

श्रीवत्ससंज्ञं चिह्नं अस्य वक्षसि स्थितम् इति श्रीवत्सवक्षाः अर्थात् भगवान के वक्षःस्थल में श्रीवत्स नामक चिह्न है, इसलिए वे श्रीवत्सवक्ष हैं। पुराण के अनुसार महर्षि भृगु के चरण चिह्न को भगवान ने अपने वक्षस्थल में धारण किया हुआ हैं। उसका ध्यान परं मंगलकारी है, क्योंकि उससे भगवान की भक्तवत्सलता का परिचय मिलता है। ऐसे श्रीवत्स के चिह्न को वक्षःस्थल में धारण किए परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६०२ –

ॐ श्रीवासाय नमः

लक्ष्मीजी को हृदय में स्थान देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Abode of Shree.

अस्य वक्षसि श्रीः अनपायिनी वसति इति श्रीवासः अर्थात् उनके वक्षःस्थल में कभी नष्ट न होनेवाली श्री निवास करती हैं, इसलिए श्रीवास हैं। श्री अर्थात् लक्ष्मी का भगवान के हृदय में वास हैं। भगवान अपने अनन्य भक्त को अपने हृदय में स्थान देते हैं। लक्ष्मीजी की भगवान के प्रति अव्यभिचारी भक्ति होने की वजह से उनका भगवान के हृदय में वास हैं।

उन श्री अर्थात् लक्ष्मी को हृदय में स्थान देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६०३ -

ॐ श्रीपतये नमः

लक्ष्मीपति परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Shree.

अमृतमथने सर्वान् सुरासुरादीन् विहाय श्रीः एवं पतित्वेन वरयामास इति श्रीपतिः अर्थात् अमृतमन्थन के समय श्री ने सुर-असुर सबको छोड़कर भगवान को ही पतिरूप से वरण किया था, इसलिए वे श्रीपति हैं। समुद्रमन्थन के समय लक्ष्मीजी समुद्र से प्रकट हुई थी, तब लक्ष्मीजी ने भगवान विष्णु का वरण किया था। तथा भगवान ने उन्हें पत्नी के रूप में स्वीकार किया था, अतः वे श्रीपति कहलाते हैं।

उन लक्ष्मीपति भवगान को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६०४ -

ॐ श्रीमतां वराय नमः

श्रीमन्तों में श्रेष्ठ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Best among Glorious.

ऋग्यजुः सामलक्षणा श्रीः येषां तेषां सर्वेषां श्रीमतां विरिंचि आदीनां प्रधानभूतः श्रीमतां वरः अर्थात् जिनका ऋक, यजु और सामरूप श्री है, उन ब्रह्मा आदि श्रीमानों में प्रधान होने से भगवान श्रीमतांवर हैं। श्री अर्थात् वेद। वास्तविक श्री ज्ञान हैं। समस्त वेदों की उत्पत्ति परमात्मा से ही हुई है, इसलिए वे वेदों के सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता होने से श्रीमतां वर हैं। उन श्रीमन्तों में सर्वश्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६०५ -

ॐ श्रीदाय नमः

धन देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Conferer of Prosperity.

श्रियं ददाति इति श्रीदः अर्थात् भक्तों का श्री देते हैं, इसलिए श्रीद हैं। हर व्यक्ति के लिए जो मूल्यवान होता है, वही उसके लिए श्री कही जाती है। जैसे भक्त के लिए भक्ति, साधक के लिए दैवी मूल्य और ज्ञान, अर्थार्थी के लिए धन ही श्री होते हैं। भगवान के पास कोई भी भक्त सच्चे दिल से जो भी मांगता है तथा उस दिशा में पुरुषार्थ करता है, तो भगवान उसे वह अवश्य देते हैं। इसलिए भगवान श्रीद कहलाते हैं। उन सम्पत्ति के देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६०६ –

ॐ श्रीशाय नमः

मायापति परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Shree.

श्रिय ईशः इति श्रीशः अर्थात् श्री के ईश होने से श्रीश हैं। श्री अर्थात् माया। जगत की उत्पत्ति के कारणभूत मायाशक्ति परमात्मा के अधीन रहती हैं। परमात्मा से ही सत्ता–स्फूर्ति प्राप्त करके जीवन्त और समर्थ होती है, इस प्रकार परमात्मा उसके स्वामी होने से श्रीश कहलाते हैं।

उन मायापति परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६०७ –

ॐ श्रीनिवासाय नमः

शुद्ध अन्तःकरण में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Abides in Immaculate Hearts.

श्रीमत्सु नित्यं वसति इति श्री निवासः अर्थात् श्रीमानों में नित्य निवास करते हैं, इसलिए श्रीनिवास हैं। श्री अर्थात् दैवी सम्पत्ति। जो दैवी सम्पत्ति से युक्त होता है, उसका हृदय शुद्ध और सात्विक होता है। परमात्मा उसके ही हृदय में वास करते हैं। इसलिए परमात्मा श्रीनिवास कहलाते हैं।

उन शुद्ध अन्तःकरण में वास करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६०८ -

ॐ श्रीनिधये नमः

समस्त शक्तियों की निधिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Receptacle of Shree.

सर्वशक्तिमये अस्मिन्नखिलाः श्रियो निधीयते इति श्रीनिधिः अर्थात् सर्वशक्तिमान ईश्वर में सम्पूर्ण श्रियां एकत्रित हैं, इसलिए वे श्रीनिधि हैं। भगवान सर्वशक्तिमान हैं। जगत में जितने भी ऐश्वर्य और शक्तियां विद्यमान हैं, भगवान स्वयं उन सबके वास्तविक, मूल स्रोत हैं। इसलिए वे श्रीनिधि कहलाते हैं। उन समस्त शक्तियों के स्रोतस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६०९ -

ॐ श्रीविभावनाय नमः

श्री के देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Distributor of Shree.

कर्मानुरूपेण विविधाः श्रियः सर्वभूतानां विभावयति इति श्रीविभावनः अर्थात् समस्त भूतों को उनके कर्मानुसार विविध प्रकार की श्रियां देते हैं, इसलिए श्रीविभावन हैं। सभी भूत अपने अपने कर्म के अनुरूप फल रूप सम्पत्ति को प्राप्त करते हैं, किन्तु उसके कर्मफल प्रदाता स्वयं भगवान हैं। इसलिए भगवान श्रीविभावन अर्थात् कर्मफल रूप सम्पत्ति को देनेवाले कहलाते है। उन कर्मफल रूप श्री को देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६१० –

ॐ श्रीधराय नमः

माया को धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bearer of Shree.

सर्वभूतानां जननीं श्रियः वक्षसि वहन् श्रीधरः अर्थात् सम्पूर्ण भूतों की जननी श्री को छाती में धारण करने के कारण वे श्रीधर हैं। समस्त भूतों की उत्पत्ति माया से होती है, अतः वह ही जगत जननी है। वह मायाशक्ति परमात्मा के आश्रित रहती है, मानों परमात्मा ही सत्ता–स्फूर्ति प्रदान करने के द्वारा उसे धारण करते हैं। इसलिए वे श्रीधर कहलाते हैं। उन माया को धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६११ –

ॐ श्रीकराय नमः

कल्याण करने वाले परमात्मा को प्रणाम।

I salute the one who is a Conferer of Shree.

स्मरतां स्तुवताम् अर्चयतां च भक्तानां श्रियं करोति इति श्रीकरः अर्थात् स्मरण, स्तवन और अर्चन करनेवाले भक्तों का कल्याण करते हैं, इसलिए श्रीकर कहलाते हैं। भगवान की महिमा को जाननेवाला भक्त विनम्र भाव से भगवान के प्रति समर्पित होता है। उनके प्रत्येक कार्य प्रभु की आराधना होती है। ऐसे भक्त का सदैव कल्याण होता हैं। प्रभु के प्रति समर्पित भक्त का कल्याण होता है, इसलिए वे श्रीकर कहलाते हैं। भक्तों के कल्याण हेतु कृतसंकल्प परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६१२ –

ॐ श्रेयसे नमः

श्रेय स्वरूप परमात्मा को नमन।

I salute the one who blesses with the Bliss of Moksha

अनपायिसुख–अवाप्तिलक्षणं श्रेयः, तच्च परस्य एव रूपम् इति श्रेयः अर्थात् कभी नष्ट न होनेवाले सुख का प्राप्त होना ही श्रेय है और वह परमात्मा का ही स्वरूप है, इसलिए वे श्रेय हैं। परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप हैं। जो परमात्मा को प्राप्त कर लेता हैं, वह शाश्वत सुख को पा लेता है। इसलिए परमात्मा ही श्रेयस्वरूप हैं। उन श्रेयस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६१३ -

ॐ श्रीमते नमः

श्री से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

Salute the embodiment of Prosperity.

श्रियः अस्य सन्ति इति श्रीमान् अर्थात् भगवान में श्रियां है, इसलिए वे श्रीमान् हैं। श्री अर्थात् सुख के स्रोतरूप सम्पत्तियां। जगत में जितनी भी सम्पत्तियां हैं, वे सब भगवान में ही स्थित हैं। भगवान ही उन सबके वास्तविक स्रोत हैं। इसलिए भगवान श्रीमान् कहलाते हैं।

उन श्री से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६१४ –

ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः

तीनों लोक के आश्रयभूत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is
the Shelter of the Three Worlds.

त्रयाणां लोकानाम् आश्रयत्वात् लोकत्रयाश्रयः अर्थात् तीनों लोकों के आश्रय होने से लोकत्रयाश्रय हैं। समस्त ब्रह्माण्ड भूः, भुवः और सुवः इन तीनों लोक में विभाजित हैं। उन समस्त लोक अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड का अधिष्ठानभूत तत्त्व, जिसकी वजह से सब टिका हुआ है; वह स्वयं परमात्मा ही हैं। इसलिए वे लोकत्रय के आश्रयभूत कहलाते हैं। उन लोकत्रयाश्रय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६१५ –

ॐ स्वक्षाय नमः

सुन्दर नेत्रवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is with Beautiful Eyes.

शोभने पुण्डरीकाभे अक्षिणी अस्य इति स्वक्षः अर्थात् भगवान की आंखें कमल के समान सुन्दर हैं, इसलिए वे स्वक्ष हैं। भगवान विष्णु की आंखें कमलपुष्प के समान सुन्दर हैं। आंखें अर्थात् दृष्टि, भगवान जब इस जगत को देखते हैं, तो कमलपत्र की तरह असंग रहते हैं, ऐसी सुन्दर ज्ञानमयी दृष्टि से युक्त होने की वजह से स्वक्ष हैं। उन सुन्दर दृष्टिवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६१६ -

ॐ स्वंगाय नमः

सुन्दर अंगवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Beautiful Limbs.

शोभनानि अंगानि अस्य इति स्वंगः अर्थात् उनके अंग सुन्दर हैं, इसलिए वे स्वंग हैं। भगवान जब अवतार लेते हैं, तो उनमें अपनी पूर्णस्वरूपता का ज्ञान सहजरूप से होता है। इस ज्ञान की वजह से उनका मन भी पूर्ण कृतार्थ, संतुष्ट और प्रसन्न होता है। ऐसी पूर्ण व कृतार्थता की मनोस्थिति ही उनके अंग-प्रत्यंग के माध्यम से प्रतिबिम्बित होती है। इसलिए सुन्दर अंगवाले हैं। उन सुन्दर अंगवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६१७ –

ॐ शतानन्दाय नमः

सैकड़ों प्रकार से अभिव्यक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Immeasurable Bliss.

एक एव परमानन्द उपाधिभेदात् शतधा भिद्यते इति शतानन्दः 'एतस्यैवानन्दस्य अन्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति' इति श्रुतेः अर्थात् वे एक ही परमानन्दस्वरूप भगवान् उपाधिभेद से सैंकडों प्रकार के हो जाते हैं, इसलिए शतानन्द हैं। श्रुति कहती है – 'इस आनन्द की मात्रा के ही सहारे अन्य प्राणी जीते हैं।' आनन्दस्वरूप परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति से अनन्त जीवों की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। यह आनन्द ही जीवों की जिजीविषा का कारण होता हैं। उन सैकड़ों प्रकार से अभिव्यक्त आनन्दस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६१८ –

ॐ नन्दये नमः

परमानन्दस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Infinite Bliss.

परमानन्दस्वरूपविग्रहो नन्दिः अर्थात् परमानन्द स्वरूप होने से भगवान नन्दि हैं। परमात्मा स्वयं आनन्द स्वरूप हैं। ऐसा आनन्द जो परमानन्द है, अर्थात् जिसमें देश, काल, वस्तु आदि किसी प्रकार की सीमाएं नहीं हैं। वे स्वयं आनन्दस्वरूप होने से आनन्द की प्राप्ति हेतु अपने से भिन्न किसी भी विषय आदि की अपेक्षा नहीं हैं। इसलिए वे नन्दि कहलाते हैं। उन परमानन्दस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६१९ -

ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः

ज्योतिगणों के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Luminaries.

ज्योतिः गणानाम् ईश्वरः ज्योतिर्गणेश्वरः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वं' इति श्रुतेः अर्थात् ज्योतिगणों के ईश्वर होने से वे ज्योतिर्गणेश्वर हैं; जैसा कि श्रुति कहती है - उसके भासने पर ही सब भासते है। प्रसिद्ध सूर्य, चन्द्र, विविध नक्षत्र आदि अनेकों लौकिक तथा पारलौकिक ज्योतियां की वजह से हम जगत के विषय देख पाते हैं। किन्तु उन समस्त ज्योतियों का प्रकाश परमात्मा की वजह से है। इसलिए वे ज्योतिस्वरूप गणों के परमेश्वर कहे जाते हैं। उन ज्योतिगणों के स्वामी को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६२० –

ॐ विजितात्मने नमः

इन्द्रिय–मन के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Conqueror of the Senses.

विजित आत्मा मनो येन स विजितात्मा अर्थात् जिन्होंने आत्मा अर्थात् मन को जीत लिया है, वे भगवान् विजितात्मा हैं। इन्द्रियां तथा मन अपने आपमें जड़स्वरूप हैं, किन्तु परमात्मा की सन्निधि पाकर वे जीवन्त हो उठ़ती हैं। इस प्रकार उन सबका अस्तित्व तक परमात्मा के नियंत्रण में है। इसलिए वे विजितात्मा कहलाते हैं। उन विजितात्मा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६२१ -

ॐ अविधेयात्मने नमः

विधान से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is beyond injunctions.

न केनापि विधेय आत्मा स्वरूपं अस्य इति अविधेयात्मा अर्थात् भगवान का स्वरूप किसी के द्वारा विधिरूप से नहीं कहा जा सकता, इसलिए वे अविधेयात्मा हैं। शब्द के माध्यम से जिसके भी बारे में विधान किया जा सके वह सब देश, काल और वस्तु की सीमा में बद्ध होता है। परमात्मा समस्त सीमाओं से परे होने की वजह से उन्हें किसी भी परिभाषा में बद्ध नहीं किया जा सकता। इसलिए वे अविधेयात्मा कहे जाते हैं। उन समस्त विधानों से परे परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६२२ -

ॐ सत्कीर्तये नमः

सत्य कीर्तिवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Pure Fame.

सती अवितथा कीर्तिः अस्य इति सत्कीर्तिः अर्थात् भगवान की कीर्ति सती अर्थात् सत्य है, इसलिए वे सत्कीर्ति हैं। जीव की कीर्ति उनके गुणों के अनुरूप वृद्धि-क्षय को प्राप्त होती है। किन्तु उसकी संकुचित अस्मिता की वजह से स्थायी नहीं रह पाती है। भगवान में अपनी पूर्ण स्वरूपता की अस्मिता की वजह से उनकी कीर्ति में वृद्धि तथा क्षय नहीं होता है। वह सदैव स्थायी बनी रहती है, इसलिए वे सत्कीर्ति कहलाते हैं। उन सत्यरूप कीर्तिवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६२३ -

ॐ छिन्नसंशयाय नमः

संशयरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Bereft of Doubts.

करतलामलकवत् सर्वं साक्षात् कृतवतः क्वापि संशयो नास्ति इति छिन्नसंशयः अर्थात् हाथ पर रखे हुए आंवले के समान सबको साक्षात् देखनेवाले भगवान को कोई संशय नहीं है, इसलिए वे छिन्नसंशय हैं। भगवान सदैव अपनी ब्रह्मस्वरूपता में स्थित होते हैं। उनका अपने तथा सब की ब्रह्मस्वरूपता के अबाधित ज्ञान होने की वजह से उनमें कोई संशय की सम्भावना ही नहीं है, मानों उनके सब संशय समाप्त हो गए हैं। उन संशयरहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६२४ -

ॐ उदीर्णाय नमः

सर्वश्रेष्ठ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Greatest.

सर्वभूतेभ्यः समुद्रिक्तत्वात् उदीर्णः अर्थात् सब प्राणियों से उत्कृष्ट होने के कारण उदीर्ण हैं। श्रेष्ठता का मापदण्ड अपने बारे में ज्ञान तथा अस्मिता हुआ करती है। भगावन जब अवतार धारण करके आते हैं, तो उनके व्यक्तित्व में पूर्णता की सुगन्ध आती है। वे अपनी पूर्णस्वरूपता की अस्मिता से युक्त है, इसलिए वे अन्य समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ हैं। उन समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६२५ -

ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः

सर्वत्र चक्षुवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has Eyes Everywhere.

सर्वतः सर्वं स्वचैतन्येन पश्यति इति सर्वतश्चक्षुः अर्थात् अपने चैतन्यस्वरूप से सब ओर से सबको देखते हैं, इसलिए वे सर्वतश्चक्षु हैं। परमात्मा स्वयं निरुपाधिक स्वरूप तथा सब की आत्मा हैं, इसलिए सभी उपाधियां परमात्मा की ही है। सब उपाधियां परमात्मा की ही होने की वजह से समस्त चक्षु आदि इन्द्रियां भी परमात्मा की ही है। मानों समस्त इन्द्रियों के माध्यम से वे ही झांक रहे हैं। इसलिए वे सर्वतश्चक्षु कहलाते हैं। उन सर्वतश्चक्षु परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६२६ –

ॐ अनीशाय नमः

सर्वोपरि परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Paramount.

न विद्यते अस्य ईश इति अनीशः 'न तस्य ईशे कश्चन' इति श्रुतेः अर्थात् भगवान का कोई ईश्वर अर्थात् स्वामी नहीं हैं, इसलिए वे अनीश हैं, जैसा कि श्रुति कहती है – 'उनका कोई ईश्वर नहीं हुआ।' परमात्मा ही सर्वोपरि हैं। वे ही सब के नियन्ता हैं। किन्तु उनका कोई नियन्ता वा ईश्वर भी नहीं है। इसलिए वे अनीश कहलाते हैं।

उन सर्वोपरि परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६२७ -

ॐ शाश्वतस्थिराय नमः

शाश्वत रूपसे स्थिर परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Eternally Immutable.

शश्वद् भवन्नपि न विक्रियां कदाचिद् उपैति इति शाश्वतस्थिरः इति नामैकम् अर्थात् नित्य होने पर भी कभी विकार को प्राप्त नहीं होते, इसलिए शाश्वतस्थिर हैं। परमात्मा जन्म-मृत्यु आदि समस्त विकारों से रहित, नित्य होने से वे सदैव अविकारी रहते हैं। इसलिए वे शाश्वतस्थिर कहे जाते हैं।

उन शाश्वत रूप से स्थिर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६२८ -

ॐ भूशयाय नमः

भूमि पर शयन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Resting on Earth.

लंकां प्रति मार्गम् अन्वेषयन् सागरं प्रति भूमौ शेते इति भूशयः अर्थात् लंका के लिए मार्ग खोजते समय समुद्रतट पर भूमि पर सोये थे, इसलिए वे भूशय हैं। भगवान ने श्रीराम अवतार के समय पृथ्वी को रावण रूप महा-अधर्मी, राक्षस से मुक्ति दिलाने हेतु यात्रा की थी। तब लंका की ओर जाने के लिए समुद्र के किनारे भूमि पर शयन किया था, इसलिए वे भूशय कहलाए। उन भूमि पर शयन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६२९ –

ॐ भूषणाय नमः

भूषणरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute Embellishment of the World.

स्वेच्छा अवतारैः बहुभिः भूमिं भूषयन् भूषणः अर्थात् अपनी इच्छा से बहुत से अवतार लेकर पृथ्वी को भूषित करने के कारण भगवान् भूषण हैं। भगवान का सृष्टि पर अवतरित होना भूषणरूप है। क्योंकि वे उपाधि के सामर्थ्य की सीमा और परिवेश में रहते हुए भी इतने दिव्य कर्म करते हैं, जिससे सृष्टि पर पुनः धर्मस्थापना होती है। उनका जीवन भी प्रत्येक जीव के लिए आदर्श बन जाता है। ऐसे सबके हितकारी भूषणरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६३० -

ॐ भूतये नमः

विभूतियों के कारणरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Cause of Glories.

सर्वविभूतीनां कारणत्वाद् भूतिः अर्थात् समस्त विभूतियों के कारण होने से भूति हैं। विभूति अर्थात् ऐश्वर्य। जगत का जो भी विषय हमारे मन को बलात् अपनी ओर आकृष्ट करे, वह ही विभूति रूप है। वैसे तो सम्पूर्ण जगत जिसमें सुन्दरता, व्यवस्था, नियम तथा संवादिता भासित हो रही है - वह सम्पूर्ण जगत ही विभूति है। इन विभूति रूप जगत के कारण परमात्मा स्वयं होने से उन्हें भूति कहा जाता है। उन भूतिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६३१ –

ॐ विशोकाय नमः

शोक से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bereft of Sorrows.

विगतः शोकः अस्य परमानन्दैकरूपत्वाद् इति विशोकः अर्थात् परमानन्द स्वरूप होने से भगवान का शोक विगत हो गया है, इसलिए वे विशोक हैं। शोक का कारण सदैव अज्ञान और उससे जनित मोह होता है। परमात्मा में न अज्ञान है, और न ही मोह है। वे परमानन्दस्वरूप हैं। इसलिए वे विशोक कहलाते हैं।

उन शोक से रहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६३२ -

ॐ शोकनाशनाय नमः

शोक का विनाश करने वाले प्रभु को नमन।

I salute the one who is Destroyer of Sorrows.

स्मृतिमात्रेण भक्तानां शोकं नाशयति इति शोकनाशनः अर्थात् अपने स्मरणमात्र से भक्तों का शोक नष्ट कर देते हैं, इसलिए शोकनाशन है। भगवान स्वयं भी शोक से रहित, आनन्दस्वरूप हैं। वे अपनी पूर्णस्वरूपता के ज्ञान से युक्त हैं। ऐसे ज्ञान से युक्त परमानन्द स्वरूप परमात्मा का जो भी भक्त स्मरण करता हैं, उनका भी मोह नष्ट होने की वजह से शोक नष्ट होता है।

उन शोक के नाश करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६३३ -

ॐ अर्चिष्मते नमः

ज्योति स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Effulgent.

अर्चिष्मतो यदीयेन अर्चिषा चन्द्रसूर्यादयः स एव मुख्यः अर्चिष्मान् अर्थात् जिनकी किरणों से सूर्य, चन्द्र, आदि अर्चिष्मान् हो रहे हैं, वे भगवान ही मुख्य अर्चिष्मान् हैं। सूर्य, चन्द्र, ग्रह नक्षत्र आदि समस्त प्रकाशपूंज अपनी किरणों से जगत को प्रकाशित करते हैं। किन्तु वे सब परमात्मा से ही सत्ता और स्फूर्ति को प्राप्त हो रहे हैं। इसलिए वास्तविक दीप्तिस्वरूप परमात्मा ही हैं। उन अपनी किरणों से सबको प्रकाशित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६३४ -

ॐ अर्चिताय नमः

सब के द्वारा पूजित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Worshipped.

सर्वलोकार्चितैः विरिंचि आदिभिः अपि अर्चितः इति अर्चितः अर्थात् ब्रह्मा आदि सम्पूर्ण लोकों से अर्चित अर्थात् पूजित हैं, इसलिए वे अर्चित हैं। हर जीव अपूर्णता से मुक्त होकर पूर्णता की अवस्था में जगना चाहता है। यदि मनुष्य के जीवन की सवोत्कृष्ट सम्भवना के बारे में सोचें तो उनके लिए पूर्णस्वरूप परमात्मा ही आदर्श होते हैं। इसलिए वे महान परमात्मा ही सबके द्वारा पूजित हैं। इसलिए वे अर्चित कहलाते हैं। उन सब के द्वारा पूजित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६३५ -

ॐ कुम्भाय नमः

घटवत् स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Primordial Pitcher.

कुम्भवद् अस्मिन् सर्व प्रतिष्ठितं इति कुम्भः अर्थात् घड़े के समान भगवान में सब वस्तुएं स्थित हैं, इसलिए वे कुम्भ हैं। जिस प्रकार घड़े का प्रयोग जल आदि अनेकों वस्तुओं को रखने हेतु प्रयोग होता है, वैसे ही भगवान भी अपने अन्दर समस्त ब्रह्माण्ड को समाए हुए हैं। इसलिए उन्हें कुम्भ कहा जाता है। उन घटवत् स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६३६ -

ॐ विशुद्धात्मने नमः

शुद्धस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Purest Soul.

गुणत्रयातीततया विशुद्धश्च असौ आत्मा इति विशुद्धात्मा अर्थात् तीनों गुणों से अतीत होने के कारण भगवान् विशुद्ध आत्मा हैं। जहां माया के सत्व आदि तीन गुण होते है, वहां पर ही मलिनता की सम्भावना होती है। परमात्मा स्वयं माया से परे हैं। इसलिए माया के तीन गुणों का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। अतः वे विशुद्धात्मा कहलाते हैं।

उन शुद्धस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६३७ -

ॐ विशोधनाय नमः

शुद्ध करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Purifier.

स्मृतिमात्रेण पापानां क्षपणात् विशोधनः अर्थात् अपने स्मरणमात्र से पापों का नाश कर देने के कारण विशोधन हैं। भगवान की महिमा तथा उनके ज्ञान का स्मरण मन में सुन्दर मूल्यों को जगाने का हेतु बन जाता हैं। जैसे जैसे मन में सुन्दर मूल्य स्थापित होते जाते हैं, वैसे वैसे पापों का क्षय होता जाता है। भगवान के स्मरणमात्र से मानों पाप क्षय होते है। इस प्रकार वे मन को शुद्ध करनेवाला हैं। उन मन को शुद्ध करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६३८ -

ॐ अनिरुद्धाय नमः

अनिरुद्ध व्यूहरचना रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Invincible.

चतुर्व्यूहेषु चतुर्थो व्यूहः अनिरुद्धः अर्थात् वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध इन चार व्यूहों में से चौथा व्यूह अनिरुद्ध हैं। व्यूह युद्ध के मैदान में सैनिकों के जत्थे की विशेषाकार की संरचना है, जिससे कि शत्रु सैनिक उसे पार न कर सके। उन प्रसिद्ध चार प्रकार के व्यूह में एक व्यूह अनिरुद्ध है। इसका भेदन शत्रुओं के द्वारा असम्भव है। ऐसी महान व्यूहरचना भगवान की विभूतिरूप ही हो सकती है। इसलिए वे अनिरुद्ध कहलाते हैं। उन अनिरुद्ध परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६३९ –

ॐ अप्रतिरथाय नमः

प्रतिपक्षरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Unvanquished.

प्रतिरथः प्रतिपक्षो अस्य न विद्यते इति अप्रतिरथः अर्थात् भगवान का कोई प्रतिरथ अर्थात् प्रतिपक्ष अथवा विरुद्ध पक्ष नहीं है, इसलिए वे अप्रतिरथ हैं। परमात्मा स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप, सब की आत्मा हैं। अपने आपका कोई भी विरोधी नहीं हो सकता है। परमात्मा ही सबकी आत्मा होने से उनका कोई विरोधी नहीं हैं।

उन विरोधियों से रहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४० -

ॐ प्रद्युम्नाय नमः

श्रेष्ठ धनवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Affluent.

प्रकृष्टं द्युम्नं द्रविणम् अस्य इति प्रद्युम्नः अर्थात् भगवान् का द्युम्न–धन श्रेष्ठ है, इसलिए वे प्रद्युम्न हैं। भगवान विष्णु स्वयं लक्ष्मीपति हैं। लक्ष्मीपति होने के कारण उनके पास सर्वश्रेष्ठ धन, समस्त प्रकार की सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में है। इसलिए वे प्रद्युम्न हैं।

उन श्रेष्ठ धन से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४१ -

ॐ अमितविक्रमाय नमः

अमित पराक्रमी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Immeasurable Power.

अमित अतुलितो विक्रमः अस्य इति अमितविक्रमः अर्थात् उनका विक्रम अथवा पुरुषार्थ अपरिमित है, इसलिए वे अमितविक्रम हैं। भगवान धर्म की स्थापना के लिए अवतरित होते हैं, तब अनेकों पराक्रम से अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना तथा रक्षा करते हैं। उनके अतुलित पराक्रम मनुष्य की बुद्धि से परे होने की वजह से उन्हें अमितविक्रम कहा जाता हैं।

उन अमित पराक्रमों से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४२ -

ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः

कालनेमि के विनाशक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Slayer of Kaalanemi.

कालनेमिं असुरं निजघानेति कालनेमिनिहा अर्थात् भगवान ने कालनेमि नामक असुर का हनन किया था, इसलिए वे कालनेमिनिहा हैं। भगवान विष्णु ने श्रीराम के रूप में अवतार लेकर कालनेमि नामक राक्षस को मारा था। इसलिए वे कालनेमिनिहा नामसे भी जाने जाते हैं।

उन कालनेमि नामक असुर को मारनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४३ -

ॐ वीराय नमः

वीरता से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is a Valiant.

वीरः शूरः अर्थात् शूर होने के कारण वे वीर हैं। भगवान अवतरित होकर असुरों का विनाश करने के द्वारा अपनी वीरता को प्रकट करते हैं, इसलिए वे वीर कहे जाते हैं। धर्म की रक्षा एवं अधर्म के नाश रूपी कार्य करने वाले भगवान को अत्यन्त वीर होना अत्यन्त आवश्यक है।

उन वीरता से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४४ -

ॐ शौरये नमः

शूरकुल में जन्में परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who had manifested in a righteous family.

शूरकुल उद्भवत्वात् शौरिः अर्थात् शूरकुल में उत्पन्न होने के कारण भगवान् शौरि हैं। द्वापरयुग में शूरसेन यदुकुल के धर्मपरायण, सशक्त प्रसिद्ध शासक थे। भगवान जब द्वापरयुग में श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए, तब वे शूरसेन के गोत्र, यदुवंश में पैदा हुए थे। इसलिए वे शौरि कहलाएं। उन शौरि भगवान को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४५ -

ॐ शूरजनेश्वराय नमः

शूरवीरों के शासक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is King of the Valiant ones.

शूरजनानां वासवादीनां शौर्य अतिशयेन इष्ट इति शूरजनेश्वरः अर्थात् अतिशय शौर्य के कारण इन्द्र आदि शूरवीरों का भी शासन करते हैं, इसलिए शूरजनेश्वर हैं। स्वर्गाधिपति इन्द्रदेवता अपने शौर्य के कारण प्रसिद्ध है। वह शूरवीर इन्द्रदेवता के भी शासक स्वयं परमात्मा हैं। परमात्मा से ही सामर्थ्य से युक्त होकर वे शासन करने में समर्थ होते हैं। उन इन्द्रदेवता के भी शासक होने से वे शूरजनेश्वर कहलाते हैं। उन शूरजनेश्वर को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४६ -

ॐ त्रिलोकात्मने नमः

तीनों लोकों की आत्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Self of Three Worlds.

त्रयाणां लोकानां अन्तर्यामितया आत्मा इति त्रिलोकात्मा अर्थात् अन्तर्यामी रूप से तीनों लोकों की आत्मा होने के कारण वे त्रिलोकात्मा हैं। चर और अचर रूप से स्थित तीनों लोकों की आत्मा परमात्मा ही हैं। उन्हींसे सब सत्ता और जीवन्तता को प्राप्त करते है। इसलिए वे त्रिलोकात्मा हैं। उन तीनों लोकों के आत्मस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४७ -

ॐ त्रिलोकेशाय नमः

तीनों लोकों के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Proprietor of the Three Worlds.

त्रयो लोकाः तदाज्ञप्ताः स्वेषु स्वेषु कर्मसु वर्तन्त इति त्रिलोकेशः अर्थात् भगवान की आज्ञा से तीनों लोक अपने अपने कार्यों में लगे रहते हैं, इसलिए वे त्रिलोकेश हैं। भूः आदि तीनों लोक में एक सुन्दर व्यवस्था और नियमबद्धता विराजमान हैं। ऐसा लगता हैं कि मानों किसी नियन्ता के द्वारा वे सब नियंत्रित हो रहे हैं। उन सबका नियन्त्रण करनेवाले स्वयं परमात्मा हैं। इसलिए वे त्रिलाकेश हैं। उन त्रिलोकेश परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४८ -

ॐ केशवाय नमः

किरणों रूप केशवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one whose hairs shine like rays

केशसंज्ञिताः सूर्यादि संक्रान्ता अंशवः तद्वत्तया केशवः अर्थात् सूर्यादि की व्याप्त हुई किरणें केश कहलाती हैं, उनसे युक्त होने के कारण भगवान् केशव हैं। सूर्य परमात्मा की सबसे सुन्दर और दिव्य अभिव्यक्ति हैं। उन सूर्य की चारों और व्याप्त किरणें मानों परमात्मा के बिखरे हुए केश अर्थात् बाल है। इसलिए वे केशव कहलाते हैं।

उन किरणों रूप केशवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६४९ -

ॐ केशिघ्ने नमः

असुर केशि को मारनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Slayer of the Asura Kesi

केशिनामां असुरं हतवानिति केशिहा अर्थात् भगवान् ने केशी नामके असुर को मारा था इसलिए वे केशिहा हैं। भगवान जब श्रीकृष्णरूप से अवतरित हुए थे, तब कंस ने उन्हें मारने हेतु अश्व की आकृतिवाले केशि नामक असुर को भेजा था। उसे भगवान ने खेल खेल में ही सहजता से मार दिया था। इसलिए भगवान केशिहा कहलाते हैं। उन केशि नामक असुर को मारनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६५० –

ॐ हरये नमः

संसार को हरनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Destroyer of the Samsar.

सहेतुकं संसारं हरति इति हरिः अर्थात् अविद्यारूप कारण के सहित संसार को हर लेते हैं, इसलिए हरि हैं। जीव का संसार तथा उसके संताप अविवेक के कारण है। इसलिए उसका नाश विवेक से ही होता है। भगवान स्वयं गीता में बताते हैं कि जब वे भक्त की भक्ति से प्रसन्न होते हैं, तो उन्हें बुद्धियोग अर्थात् विवेक प्रदान करते हैं, जिससे कि संसार का नाश हो। इस प्रकार परमात्मा संसार को हरनेवाले होने से वे हरि हैं। उन श्री हरि को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६५१ -

ॐ कामदेवाय नमः

कामदेव रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Incarnation of Love.

धर्मादिपुरुषार्थचतुष्टयं वांछद्भिः काम्यते इति कामः, स चासौ देवश्च इति कामदेवः अर्थात् धर्मादि पुरुषार्थचतुष्टय की इच्छावालों से कामना किये जाते हैं, इसलिए काम हैं। काम भी हैं और देव भी हैं, इसलिए कामदेव हैं। चारों पुरुषार्थ की सिद्धि के पीछे मनुष्य की मूलभूत कामना आनन्द की प्राप्ति की होती हैं, परमात्मा स्वयं आनन्द के स्रोत ही नहीं, किन्तु आनन्दस्वरूप है। प्रत्येक जीव जाने-अन्जाने ऐसे परमात्मा की ही कामना करता हैं। इसलिए वे कामदेव कहलाते हैं। उन कामदेव रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६५२ -

ॐ कामपालाय नमः

कामपाल रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Fulfiller of Desires.

कामिनां कामान् पालयति इति कामपालः अर्थात् कामियों की कामनाओं का पालन करते हैं, इसलिए कामपाल हैं। समस्त जीव अपनी कामना की पूर्ति के लिए पुरुषार्थ करता है। जीव के उन कर्म का फल प्रदान करने के द्वारा कामना की पूर्ति कर्मफलदाता स्वयं परमात्मा ही करते हैं, इसलिए वे कामपाल कहलाते हैं।

उन कामना पूर्ति करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६५३ -

ॐ कामिने नमः

पूर्ण संतुष्ट परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Satiated.

पूर्णकामस्वभावत्वात् कामी अर्थात् स्वभावतः पूर्णकाम होने से कामी हैं। परमात्मा स्वयं पूर्ण स्वरूप हैं, इसलिए उनमें किसी भी विषय की कामना का सम्पूर्ण अभाव है। पूर्णकाम वह होता है कि जिनकी समस्त कामनाएं पूर्ण हो गई हैं। परमात्मा अपने आपमें अपने आपसे संतुष्ट होने की वजह से पूर्णकाम हैं। इसलिए वे कामी अर्थात् पूर्णकाम कहे जाते हैं।

उन पूर्णकाम स्वरूप आनन्द के धाम परमात्मा को सादर नमन।

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६५४ -

ॐ कान्ताय नमः

श्रेष्ठ कान्ति से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supremely Handsome.

अभिरूपतमं देहं वहन् कान्तः अर्थात् परं सुन्दर देह धारण करने के कारण कान्त हैं। कान्त अर्थात् कान्ति वा तेज से युक्त। परमात्मा देह धारण करते हैं, वह भी अत्यन्त सुन्दर तेजोमय होता है। उनकी पूर्ण स्वरूपता ही उनके देह में कान्ति की तरह से झलकती है। इसलिए वे कान्ति से युक्त कान्त हैं।

उन श्रेष्ठ कान्ति से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६५५ -

ॐ कृतागमाय नमः

शास्त्रों के रचयिता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Promulgator of the Scriptures

कृत आगमः श्रुतिस्मृति आदि लक्षणो येन सः कृतागमः अर्थात् श्रुति तथा स्मृति आदि आगमशास्त्र रचे हैं, वे भगवान् कृतागम हैं। परमात्मा का ज्ञान स्वयं परमात्मा ही दे सकते हैं। परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान जिसमें निहित है, ऐसे आगमशास्त्र सृष्टि की उत्पत्ति के समय स्वयं परमात्मा के निःश्वास की तरह प्रकट हुए थे। इसलिए वे ही शास्त्र के रचयिता होने से वे कृतागम हैं।

उन कृतागम रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६५६ -

ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः

सब निर्देश से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Indescribable Form.

इदं तदीदृशं वेति निर्देष्टुं यत् न शक्यते गुणादि अतीतत्वात् तदेव रूपमस्य इति अनिर्देश्यवपुः अर्थात् गुणादि से अतीत होने के कारण भगवान् का रूप 'यह, वह अथवा ऐसा' इस प्रकार निर्देश नहीं किया जा सकता, इसलिए वे अनिर्देश्यवपु हैं। जिसका भी शब्दों से वर्णन वा परिभाषा दी जा सकें - वह सीमित और जड़ होता है। परमात्मा स्वयं चेतनस्वरूप, समस्त सीमाओं से परे होने से उन्हें यह वा वह इस प्रकार दृश्य विषय की तरह बताया नहीं जा सकता है। इसलिए वे अनिर्देश्यवपु हैं। उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६५७ –

ॐ विष्णवे नमः

सर्वव्यापी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All Pervading.

रोदसी व्याप्य कान्तिः अभ्यधिका स्थिता अस्य इति विष्णुः अर्थात् भगवान् की प्रचुर कान्ति पृथ्वी और आकाश को व्याप्त करके स्थित है, इसलिए वे विष्णु हैं। सम्पूर्ण जगत जड़, विकारी माया का विलास होते हुए भी अत्यन्त सुन्दर, संवादिता से युक्त दीखता है। क्योंकि स्वयं पूर्णस्वरूप परमात्मा इस सम्पूर्ण जगत के कण–कण को व्याप्त करके स्थित हैं। वे सर्वव्यापी होने की वजह से विष्णु कहलाते हैं। उन विष्णु स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६५८ –

ॐ वीराय नमः

गति आदि से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Valorous.

गत्यादिमत्त्वात् वीरः, 'वी गति–व्याप्ति–प्रजन–कान्ति–असन खादनेषु इति धातुपाठात् अर्थात् गति आदि से युक्त होने के कारण वीर हैं, जैसा कि धातुपाठ है – वी धातु गति, व्याप्ति, जनन, कान्ति, फेंकने और खाने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। परमात्मा स्वयं उपाधि को धारण करके जीवों की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। सभी जीव इस उपाधि को धारण करके विविध क्रिया करते है। जीव के रूप में परमात्मा की मानों क्रियाएं करते हैं। इसलिए वे वीर कहलाते हैं। उन वीर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६५९ -

ॐ अनन्ताय नमः

अनन्तस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Infinite.

व्यापित्वात् नित्यत्वात् सर्वात्मत्वात् देशतः कालतो वस्तुतश्च अपरिच्छिन्नः अनन्तः अर्थात् व्यापी, नित्य, सर्वात्मा तथा देश, काल और वस्तु से अपरिच्छिन्न होने के कारण भगवान् अनन्त हैं। परमात्मा का देशतः, कालतः तथा वस्तुतः कभी भी अन्त नहीं होता हैं, किन्तु वे ही सबको अस्तित्व और स्फूर्ति प्रदान करते हैं। इसलिए वे अनन्त स्वरूप हैं।

उन अनन्त स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६० -

ॐ धनंजनाय नमः

धनंजय रूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who alone manifested as Arjun - the Conqueror of Wealth.

यद् दिग्विजये प्रभूतं धनम् अजयत् तेन धनंजयः अर्जुनः 'पाण्डवानां धनंजयः' इति भगवद्वचनात् अर्थात् अर्जुन के दिग्विजय के समय बहुत सा धन जीता था, इसलिए वे धनंजय हैं। तथा 'पाण्डवों में मैं धनंजय हूं' भगवान के इस वचनानुसार भगवान् की विभूति होने से वे स्वयं भी धनंजय हैं।

उन धनंजय अर्थात् अर्जुन के रूप में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६१ -

ॐ ब्रह्मण्याय नमः

ब्राह्मणादि के हितकारी प्रभु को नमन।

I salute the one who is Patron of Brahman.

'तपो वेदाश्च विप्राश्च ज्ञानं च ब्रह्मसंज्ञितम्।' तेभ्यो हितत्वात् ब्रह्मण्यः। अर्थात् तप, वेद, ब्राह्मण तथा ज्ञान - ये सब ब्रह्म कहलाते हैं' इनके हितकारी होने से भगवान् ब्रह्मण्य हैं। तप, वेद, ब्राह्मण (जो ब्रह्मस्वरूप में रमता हैं) और ज्ञान - ब्रह्म की प्राप्ति की पात्रता हेतु साधन हैं, इसलिए वे ब्रह्म कहलाते हैं। उन सब के हितकारी होने से उन सबकी रक्षा हेतु भगवान् स्वयं अवतार धारण करते हैं, इसलिए वे ब्रह्मण्य हैं। उन तप आदि के हितकारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६२ -

ॐ ब्रह्मकृते नमः

तप आदि के प्रतिपादक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Author of Brahman.

तप आदीनां कर्तृत्वात् ब्रह्मकृत् अर्थात् तप आदि के करनेवाले होने से ब्रह्मकृत हैं। ब्रह्म की प्राप्ति के साधनरूप तप आदि साधन का प्रतिपादन वेदों के द्वारा किया गया हैं। उन वेद की उत्पत्ति करनेवाले स्वयं परमात्मा ही हैं। इसलिए वे ब्रह्मकृत् हैं।

उन तप आदि के प्रतिपादक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६३ -

ॐ ब्रह्मणे नमः

सृष्टिरचयिता ब्रह्मास्वरूप परमात्मा को नमन।

I salute the one who as Creator creates all.

ब्रह्मात्मना सर्वं सृजति इति ब्रह्मा अर्थात् ब्रह्मारूप से सब की रचना करते हैं, इसलिए ब्रह्मा हैं। परमात्मा अपनी त्रिगुणात्मिका मायाशक्ति को धारण करके रजोगुण की प्रधानता से युक्त होकर सृष्टि का सृजन करते हैं, तब वे ब्रह्मा कहलाते हैं।

उन सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६४ -

ॐ ब्रह्मणे नमः

सबसे बड़े ब्रह्म को नमस्कार।

I salute the one who is the Biggest.

बृहत्त्वाद् बृंहणत्वाच्च सत्यादि लक्षणं ब्रह्म, 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' इति श्रुतेः अर्थात् बड़े तथा बढ़ानेवाले होने से भगवान् सत्यादि लक्षणविशिष्ट ब्रह्म हैं। श्रुति कहती हैं - ब्रह्म सत्य, ज्ञान और अनन्त रूप हैं।' साधारणतः बड़ा शब्द विशेषण के तौर पर प्रयोग होता है। परमात्मा एक ही अद्वय स्वरूप होने से उनसे न कोई बड़ा और न कोई छोटा है, किन्तु सब छोटे और बड़ें को व्याप्त करके स्थित हैं, इसलिए वे श्रुति प्रतिपादित सत्यादि लक्षणवाले ब्रह्म हैं। उन ब्रह्मतत्त्व को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६५ -

ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः

तपादि रूप ब्रह्म को प्रोत्साहित करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Promotor of Brahman.

तपादीनां विवर्धनात् ब्रह्मविवर्धनः अर्थात् तप आदि को बढ़ाने के कारण ब्रह्मविवर्धन हैं। तप, वेद, ब्राह्मण और ज्ञान ब्रह्म की प्राप्ति के साधनरूप हैं तथा उसीसे सृष्टि में धर्ममय व्यवस्था बनी रहती है। इसलिए उन तप आदि रूप ब्रह्म की रक्षा करके तथा उसे प्रोत्साहित करके उसकी वृद्धि करते हैं। इसी कारण से वे ब्रह्मविवर्धन हैं। उन ब्रह्म की वृद्धि करनेवाले प्रभु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६६ -

ॐ ब्रह्मविदे नमः

ब्रह्म को आत्मस्वरूप जाननेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Knower of Brahman.

वेदं वेदार्थं च यथावद् वेत्ति इति ब्रह्मवित् अर्थात् वेद तथा वेद के अर्थ को यथावत् जानते हैं, इसलिए ब्रह्मवित् हैं। वेदों का मूल तात्पर्य ब्रह्म का आत्मारूप से ज्ञान कराना है। परमात्मा इस अर्थ के अर्थात् अपनी ब्रह्मस्वरूपता के ज्ञान से युक्त हैं। इसलिए वे ब्रह्मवित् हैं।

उन ब्रह्म को आत्मा की तरह जाननेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६७ -

ॐ ब्राह्मणाय नमः

ब्राह्मण रूपसे स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who manifests as Brahmin.

ब्राह्मणात्मना समस्तानां लोकानां प्रवचनं कुर्वन् वेदस्य अयमिति ब्राह्मणः अर्थात् ब्राह्मणरूप से समस्त लोकों के प्रति 'वेद में यह है' ऐसा उपदेश करते हैं, इसलिए ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण वह होता है जो वेदों के मूल रहस्य के ज्ञान से युक्त हैं, उसीमें रमता हैं तथा उन वेदों के रहस्य को अन्य को उपदेश करता हैं। जो इन रहस्यों को जाननेवाला तथा जनानेवाला है - वह निश्चितरूप से परमात्मा की विभूति रूप ही है। उन ब्राह्मणरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६६८ -

ॐ ब्रह्मिणे नमः

ब्रह्मी स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who himself is all divine qualities.

ब्रह्मसंज्ञिताः तच्छेषभूता अत्रेति ब्रह्म अर्थात् ब्रह्म के शेषभूत (तप, वेद, मन प्राण आदि) जो ब्रह्म ही कहलाते हैं, भगवान में ही हैं, इसलिए वे ब्रह्मी हैं। तप, वेद आदि ब्रह्म की प्राप्ति के साधनरूप होने से वे ब्रह्म के शेषभूत हैं, वह सब परमात्मा से ही उत्पन्न, उन्हीं में स्थित रहते हैं, इसलिए वे ब्रह्मी कहलाते हैं।

उन तप आदि रूप ब्रह्म के आधारभूत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६६९ –

ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः

ब्रह्म के ज्ञाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Knower of Brahman.

वेदान् स्वात्मभूतान् जानाति इति ब्रह्मज्ञः अर्थात् अपने आत्मभूत वेदों को जानते हैं, इसलिए ब्रह्मज्ञ हैं। परमात्मा स्वयं ब्रह्मस्वरूपता में स्थित रहते हैं, वेदों के रहस्यमय ज्ञान – ब्रह्म को अपनी आत्मा की तरह जानते हैं, इसलिए वे ब्रह्म को जाननेवाले ब्रह्मज्ञ हैं।

उन ब्रह्म को आत्मरूप से जाननेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६७० –

ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः

ब्राह्मणप्रिय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who loves Brahmins.

ब्राह्मणाः प्रिया अस्य इति। 'यं देवं देवकी देवी वसुदेवादजीजनत्। भौमस्य ब्रह्मणो गुप्त्यः दीप्तम् अग्निमिवारणिः।।' इति महाभारते। अर्थात् ब्राह्मण इनके प्रिय हैं, इसलिए वे ब्राह्मणप्रिय हैं। महाभारत में भी कहा है – 'प्रज्वलित अग्नि को जिस प्रकार अरणि प्रकट करती है, उसी प्रकार जिस देव को पृथ्वी के ब्राह्मणों की रक्षा के लिए देवी देवकी ने वसुदेवजी से उत्पन्न किया हैं'। परमात्मा को ब्राह्मण प्रिय होने की वजह से ही वे उनकी रक्षा हेतु अवतरित होते हैं। उन ब्राह्मणप्रिय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६७१ –

ॐ महाक्रमाय नमः

महान् डगवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Wide Stride.

महान्तः क्रमा पादविक्षेपा अस्य इति महाक्रमः, 'शं नो विष्णुरुरुक्रमः' इति श्रुतेः। अर्थात् भगवान् का क्रम अर्थात् पादविक्षेप महान् है, इसलिए वे महाक्रम हैं। श्रुति कहती है 'उरुक्रम विष्णु हमें शान्ति प्रदान करें'। परमात्मा देश, काल और वस्तु से अपरिच्छिन्न हैं, अर्थात् सर्वव्यापी हैं। वे सर्वव्यापी होने के कारण मानो उनके डग अथवा कदम महान, व्यापक हैं। इसलिए वे महाक्रम कहलाते हैं। उन महान डग वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६७२ -

ॐ महाकर्मणे नमः

महान् कर्मवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Performer of Great Deeds.

महत् जगदुत्पत्त्यादि कर्म अस्येति महाकर्मा अर्थात् उनके जगत् की उत्पत्ति आदि महान् कर्म हैं, इसलिए वे महाकर्मा हैं। यह सृष्टि दिव्य, अकल्पनीय हैं, उनमें अद्‌भुत व्यवस्था दीखती हैं। ऐसी सुन्दर सृष्टि की उत्पत्ति तथा स्थिति परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके करते हैं। इतना ही नहीं, स्वयं ही इस सृष्टि का अकल्पनीय ढंग से प्रलय भी करते हैं। ऐसे अद्‌भुत, महान कर्म करने की वजह से वे महाकर्म कहलाते हैं। उन महान् कर्मवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६७३ -

ॐ महातेजसे नमः

महान् तेजवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Great Resplendence.

यदीयेन तेजसा तेजस्विनो भास्करादयः, तत्तेजो महद् अस्य इति महातेजाः, 'येन सूर्यस्तपति तेजसेद्धः' इति श्रुतेः। अर्थात् जिनके तेजसे सूर्य आदि तेजस्वी हो रहे हैं, उन भगवान् का वह तेज महान् है, इसलिए वे महातेजा है। श्रुति कहती है - 'जिस तेज से प्रज्वलित होकर सूर्य तपता है'। जगत के सूर्य आदि सभी तेजस्वी पदार्थ परमात्मा के ही द्वारा सत्ता-स्फूर्ति प्राप्त करके तेजस्वी होते है। इसलिए तेजस्वियों को भी तेजस्वी बनानेवाले वे महातेज हैं। उन महातेजस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६७४ –

ॐ महोरगाय नमः

महान सर्परूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Serpant.

महांश्च असौ उरगश्च इति महोरगः, 'सर्पाणामस्मि वासुकिः' इति भगवद्वचनात्। अर्थात् वे महान् उरग अर्थात् वासुकि सर्परूप हैं, इसलिए महोरग हैं। भगवान का यह वचन है कि 'सर्पों में मैं वासुकि हूं'। जिन वासुकि के द्वारा समुद्रमंथन किया गया था, तथा जो शेषनाग अपने शीश पर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण किए है। वह महान सर्प भगवान की विभूतिस्वरूप हैं। इसलिए वे महोरग कहलाते हैं। उन महान सर्परूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६७५ –

ॐ महाक्रतवे नमः

महान् त्यागस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Sacrifice.

महांश्च असौ क्रतुः च इति महाक्रतुः। अर्थात् जो महान् यज्ञ हैं, वह महाक्रतु है। किसी भी महान वस्तु की प्राप्ति त्याग से ही होती है। जब जीवभाव का त्याग अर्थात् निषेध होता है, तब परमात्मा की अवस्था में जाग्रति होती है। इसलिए जीवभाव की आहुतिरूप महान त्याग परमात्मस्वरूप ही है।

उन महान त्यागस्वरूप परमामा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६७६ -

ॐ महायज्वने नमः

महान यज्ञकर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Performer of Great Yagnas.

महांश्च असौ यज्वा च इति लोकसंग्रहार्थं यज्ञान् निर्वर्तयन् महायज्वा अर्थात् महान् हैं और लोकसंग्रह के लिए यज्ञानुष्ठान करने से यज्वा भी हैं, इसलिए महायज्वा हैं। भगवान् श्रीराम के रूप में जब अवतरित हुए तब उन्होंने महान अश्वमेध यज्ञ किया था। अश्वमेध यज्ञ राजा के धर्मप्रिय-अनुशासन से प्रजा को सचेत कराने के लिए होता है। ऐसा महान यज्ञ करने के कारण वे महायज्वा कहलाएं। उन महान यज्ञ करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६७७ –

ॐ महायज्ञाय नमः

महान यज्ञस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Yagna.

महांश्च असौ यज्ञश्च इति महायज्ञः, 'यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि' इति भगवद्वचनात्। अर्थात् महान हैं और यज्ञ हैं, इसलिए वे महायज्ञ हैं। जैसा कि भगवान ने कहा हैं – 'यज्ञों में मैं जपयज्ञ हूं।' जप सभी यज्ञ के आवश्यक अंगरूप होता है। जिसमें नाम की आवृत्ति के माध्यम से परमात्मा की महानता और दिव्यता का अनुभव किया जाता है। इसलिए जपयज्ञ परमात्मा की विभूतिरूप होने से वे महायज्ञ स्वरूप हैं। उन महान यज्ञस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६७८ –

ॐ महाहविषे नमः

महान आहुतिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Oblation.

महच्च तद्धविश्च इति ब्रह्मात्मनि सर्व जगत् तदात्मतया हूयते इति महाहविः अर्थात् महान् हैं, और हवि हैं, क्योंकि ब्रह्मात्मा में ही ब्रह्मभाव से सम्पूर्ण जगत् का हवन किया जाता है, इसलिए महाहवि हैं। सभी यज्ञों में आहुति देनेवाला जीव होता है, वह स्वयं ही ब्रह्मस्वरूप होता है। अन्ततः इसी जीवभाव की आहुति के द्वारा ही परमात्मा में जाग्रति होती है। इसलिए जीवरूप से स्थित महान आहुति परमात्मा ही हैं। उन महान आहुति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६७९ –

ॐ स्तव्याय नमः

स्तुतियोग्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Eulogized.

सर्वैः स्तूयते न स्तोता कस्यचिद् इति स्तव्यः अर्थात् सबसे स्तुति किए जाते हैं, स्वयं किसी की स्तुति नहीं करते, इसलिए स्तव्य हैं। परमात्मा सबसे महान होने के कारण सबके द्वारा उनकी स्तुति की जाती है। इसलिए वे स्तव्य अर्थात् स्तुतियोग्य है।

उन सबके द्वारा स्तुति किए जानेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६८० –

ॐ स्तवप्रियाय नमः

स्तुतिप्रिय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one Propitiated by Prayer.

सर्वैः स्तूयते न स्तोता कस्यचिद् इति स्तव्यः। अर्थात् सबसे स्तुति किए जाने की वजह से स्तव्य हैं तथा उन्हें स्तुति प्रिय लगती हैं, इसलिए वे स्तवप्रिय हैं। परमात्मा को स्तुति प्रिय लगती है, क्योंकि उससे स्तुति करनेवाले का अभिमान का विसर्जन होता है, वह शरणागत होकर जीवन के मोक्षरूप परं पुरुषार्थ के लिए पात्र बनता है। इसलिए परमात्मा स्तुतिप्रिय हैं। उन स्तुतिप्रिय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६८१ -

ॐ स्तोत्राय नमः

स्तोत्ररूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Hymn.

येन स्तूयते तत् स्तोत्रम्, गुण–संकीर्तनात्मकं तद् हरिः एवेति। अर्थात् जिससे स्तुति की जाती है, वह गुण–कीर्तन ही स्तोत्र है। वह भी श्री हरि ही हैं। परमात्मा मन और वाणी से परे हैं। तथापि उनके गुण और संकीर्तन जिसके द्वारा किया जाए, वह परमात्मा की दिव्य विभूतिरूप ही होना चाहिए। इसलिए स्तोत्र भी परमात्मरूप ही हैं।

उन स्तोत्ररूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६८२ –

ॐ स्तुतये नमः

स्तुतिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Eulogy.

स्तुतिः स्तवनक्रिया। अर्थात् स्तवन–क्रिया का नाम स्तुति है। स्तुति की क्रिया भी परमात्मारूप ही हैं। समस्त स्तुतियां ज्ञानी मनीषियों के द्वारा लिखी गई हैं, उनको अपनी वाणी और मन में लाने से भगवान के ज्ञान और भक्ति दोनों प्राप्त हो जाती है। अतः ये दिव्य होती हैं। इसलिए स्तुति भी परमात्मरूप ही है।

उन स्तुतिरूप से परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६८३ -

ॐ स्तोत्रे नमः

स्तुति करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Adorer.

स्तोता अपि स एव अर्थात् सर्वरूप होने के कारण स्तुति करनेवाले भी भगवान् स्वयं ही हैं। स्तुति करनेवाला जीव होता है। जीव अपनी बहिर्मुख इन्द्रियों के कारण स्वाभाविक ही बहिर्मुख होकर विषयों के प्रति प्रवृत्त रहता है। जो इन विषयों के जगत से परे उसके स्वामी नियन्ता जगदीश्वर की महिमा देख पाता है, और विनम्रभाव से स्तुति करता है, वह परमात्मा की विभूति ही है। वह जीव स्तुति करनेवाला स्तोता है। उन स्तुति करनेवाले जीवरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६८४ -

ॐ रणप्रियाय नमः

रणप्रिय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lover of Battles.

प्रियो रणो यस्य यतः पंच महायुधानि धत्ते सततं लोकरक्षणार्थं अतो रणप्रियः। अर्थात् जिन्हें रण प्रिय है और इसीलिए जो लोकरक्षा के निमित्त शंख, चक्र, गदा, धनुष और खड्ग - इन पांच आयुधों को निरन्तर धारण किए रहते हैं, वे भगवान् रणप्रिय हैं। लोकरक्षा हेतु धर्मरक्षा के लिए परमात्मा कृतसंकल्प हैं। इसलिए वे अधर्म का नाश करने हेतु युद्ध के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इसलिए वे रणप्रिय कहलाते हैं। उन रणप्रिय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६८५ –

ॐ पूर्णाय नमः

पूर्णस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Full.

सकलैः कामैः सकलाभिः शक्तिभिश्च सम्पन्नः इति पूर्णः। अर्थात् सम्पूर्ण कामनाओं से और शक्तियों से सम्पन्न हैं, इसलिए भगवान् पूर्ण हैं। परमात्मा को किसी भी प्रकार की कामना नहीं होती है। क्योंकि वे ही समस्त काम्य विषयों की आत्मा हैं। उन्हीं पूर्णस्वरूप परमात्मा से ही समस्त काम्यविषय तथा शक्तियां उद्भुत हुई हैं, तथा उनमें ही स्थित है।

उन पूर्णस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६८६ -

ॐ पूरयित्रे नमः

मनोकामना पूर्ण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Fulfiller.

न केवलं पूर्ण एव, पूरयिता च सर्वेषां सम्पद्भिः। अर्थात् केवल पूर्ण ही नहीं हैं, बल्कि सम्पत्ति से सबके पूरयिता भी हैं। परमात्मा के संकल्प से ही सब कुछ उत्पन्न हुआ हैं और टिका हुआ है। किन्तु वे स्वयं पूर्णस्वरूप होने से उन सब की कामना से रहित हैं। उनके पास कोई भी भक्त अपना संकल्प और इच्छा रखकर उस दिशा में उचित पुरुषार्थ करता है, तो वे अवश्य पूर्ण करते हैं। इसलिए वे कामना की पूर्ति करनेवाले पूरयिता कहलाते हैं। उन मनोकामना पूर्ण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६८७ –

ॐ पुण्याय नमः

पुण्यस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Auspicious.

स्मृतिमात्रेण कल्मषाणि क्षपयति इति पुण्यः। अर्थात् स्मरणमात्र से पापों का क्षय कर देते हैं, इसलिए पुण्य हैं। परमात्मा अज्ञान और माया से परे होने की वजह से माया की मलिनता और विकारों से परे, परं शुद्धस्वरूप हैं। ऐसे परं पवित्र परमात्मा की दिव्यता का स्मरणमात्र ही पापों को हर कर शुद्ध बना देता हैं। इसलिए वे पुण्यस्वरूप हैं।

उन पुण्यस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६८८ –

ॐ पुण्यकीर्तये नमः

पुण्यकीर्ति परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Holy Fame.

पुण्या कीर्तिरस्य यतः पुण्यम् आवहयति अस्य कीर्तिः नृणामिति पुण्यकीर्तिः। अर्थात् भगवान् की कीर्ति पुण्यमयी है, क्योंकि वह मनुष्यों को पुण्य प्रदान करती हैं, इसलिए वे पुण्यकीर्ति हैं। जिनका स्मरणमात्र मन को पवित्र और प्रसन्न तथा निश्चिंत करनेवाला हो, वे निश्चितरूप से पुण्यमयी कीर्ति से युक्त होने चाहिए।

उन पुण्यकीर्ति परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६८९ –

ॐ अनामयाय नमः

व्याधिरहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Healthy.

आन्तरैः बाह्यैः व्याधिभिः कर्मजैः न पीड्यते इति अनामयः अर्थात् कर्म से उत्पन्न हुई बाह्य अथवा आन्तरिक व्याधियों से पीड़ित नहीं होते हैं, इसलिए अनामय हैं। जीव के जीवन में सुख–दुःख, शारीरिक तथा मानसिक रोग उसके धर्म–अधर्ममय कर्म के फलरूप से प्राप्त होते है। कर्मफल उसे ही मिलता है, जो स्वयं को कर्ता–भोक्ता जीव मानता है। परमात्मा में कर्तृत्व–भोक्तृत्व का अभाव होने की वजह से वे उक्त समस्त व्याधियों से रहित, अनामय हैं। उन व्याधि –रहित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६९० –

ॐ मनोजवाय नमः

मन जैसी तीव्र गतिवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is as Fast as the Mind.

मनसो वेग इव वेगोऽस्य सर्व गतत्वात् मनोजवः अर्थात् सर्वगत होने के कारण भगवान् का मन के वेग के समान वेग है, इसलिए वे मनोजव हैं। जगत में सबसे तीव्र गति मन की होती है। मन जहां भी जाता है, परमात्मा सर्वव्यापी होने से वहां पहले से ही उपस्थित हैं। इसलिए वे मनोजव कहलाते हैं।

उन मन से भी तीव्र गतिवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६९१ –

ॐ तीर्थकराय नमः

विद्याओं के उपदेष्टा परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Giver of Worldly Vidyas.

चतुर्दशविद्यानां बाह्यविद्या–समयानां च प्रणेता प्रवक्ता च इति तीर्थकरः अर्थात् तीर्थ – विद्या को कहते हैं, भगवान चौदह विद्याओं और वेद–बाह्य विद्याओं के सिद्धान्तों के कर्ता और वक्ता हैं, इसलिए वे तीर्थकर हैं। भगवान ने सृष्टि के आरम्भ में हयग्रीवरूप से मधु और कैटभ को मारकर सम्पूर्ण श्रुतियां और अन्य विद्याएं ब्रह्माजी को देवशत्रुओं की वंचना के लिए इन विद्याओं का भी उपदेश दिया था। इसलिए वे तीर्थकर कहलाते हैं। उन विद्याओं के उपदेष्टारूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६९२ –

ॐ वसुरेतसे नमः

सुवर्ण वीर्यवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Golden Essence.

वसु सुवर्ण रेतः अस्येति वसुरेताः अर्थात् वसु अर्थात् सुवर्ण, भगवान् का रेतस् अर्थात् वीर्य है, इसलिए वे वसुरेता हैं। सुवर्ण अर्थात् अत्यन्त तेजस्वी, दिव्यता से युक्त ऐसा जिनका वीर्य अर्थात् सामर्थ्य है। परमात्मा मायारूप योनि में चेतनारूप वीर्य का आदान करके इस अद्भुत सृष्टि का र्मिाण करते हैं। इसलिए वे हिरण्यगर्भ अथवा वसुरेत हैं।

उन स्वर्ण वीर्यवाले वसुरेत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६९३ -

ॐ वसुप्रदाय नमः

बहुत धन देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Bestower of Wealth.

वसु धनं प्रकर्षेण ददाति साक्षात् धनाध्यक्षो अयम्, इतरस्तु तत्प्रसादाद् धनाध्यक्षः इति वसुप्रदः अर्थात् भगवान् खुले हाथ से वसु अर्थात् धन देते हैं, इसलिए वे वसुप्रद हैं। साक्षात् धनाध्यक्ष तो वे ही हैं, और कुबेरादि तो उनकी कृपा से ही धनाध्यक्ष हैं। स्वर्गादि के धनाध्यक्ष कुबेर कहलाते हैं। किन्तु वे प्रभु के एक सेवकमात्र है। वस्तुतः परमात्मा स्वयं ही सब को धन देनेवाले धनाध्यक्ष हैं।

उन बहुत धन देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६९४ -

ॐ वसुप्रदाय नमः

मोक्ष नामक फल देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bestower of Moksha.

वसु प्रकृष्टं मोक्षाख्यं फलं भक्तेभ्यः प्रददाति इति द्वितीयो वसुप्रदः। अर्थात् भक्तों को वसु अर्थात् मोक्षरूप उत्कृष्ट फल देते हैं। भगवान धन और भोग के प्रेमी को धन और भोग्य पदार्थ उसके पुरुषार्थ के अनुपात्त में प्रदान करते हैं। किन्तु जो भगवान का भक्त अर्थात् प्रेमी है, उन्हें स्वयं परमात्मा प्राप्त होते हैं और वह मोक्षरूप फल को प्राप्त करता हैं।

उन मोक्ष नामक फल को देनेवाने परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६९५ –

ॐ वासुदेवाय नमः

वसुदेवपुत्र श्रीकृष्ण को नमस्कार।

I salute Lord Shri Krishna - Son of Vasudev.

वसुदेवस्य अपत्यं वासुदेवः अर्थात् वसुदेवजी के पुत्र होने से वे वासुदेव हैं। द्वापरयुग में पृथ्वी पर बढ़ रहे असुरों के अत्याचार से धर्म जब अभिभूत होने लगा, तब परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति को वश में करके वसुदेव और देवकीपुत्र की तरह अवतरित हुए थे। वसुदेवपुत्र होने की वजह से वे वासुदेव कहलाएं।

उन वसुदेवपुत्र श्रीकृष्णरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६९६ -

ॐ वसवे नमः

सब भूतों में वास करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Indweller of All.

वसन्ति भूतानि तत्र, तेषु अयमपि वसति इति वसुः अर्थात् भगवान् में भूत बसते हैं, तथा सब भूतों में भगवान् बसते हैं, इसलिए वे वसु हैं। जल से उत्पन्न हुई समस्त लहरों में जिस प्रकार जल का वास होता है, उसी प्रकार सभी पंचमहाभूत की सृष्टि परमात्मा से उत्पन्न हुई है, इसलिए सभी भूतों में वे वास करने की वजह से वसु कहे जाते हैं।

उन सब भूतों में वास करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६९७ -

ॐ वसुमनसे नमः

समष्टि रूप एवं मन से स्थित प्रभु को नमन।

I salute the Magnanimous Indweller of All.

अविशेषेण सर्वेषु विषयेषु वसति इति वसु, तादृशं मनो अस्य इति वसुमनाः अर्थात् जो समस्त पदार्थों में सामान्य भाव से बसता है, उसे वसु कहते हैं, इस प्रकार का भगवान का मन है, इसलिए वे वसुमना हैं। सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा सभी पदार्थों को सत्तारूप से व्याप्त करके भी सामान्यरूप से स्थित हैं। अर्थात् किसी एक विषय को महत्वपूर्ण समझना और अन्य को महत्वविहीन समझना यह उनका स्वभाव नहीं है। इस प्रकार का मन होने वजह से वे वसुमना हैं। उन वसुमना परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ६९८ -

ॐ हविषे नमः

यज्ञ की हविरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Oblation.

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः' इति भगवद्-वचनात् हविः अर्थात् 'ब्रह्म को अर्पण किया जाता है, ब्रह्म ही हवि है' भगवान् के इस वचनानुसार वे हवि हैं। सृष्टि के अभिन्न निमित्त-उपादान कारण होने की वजह से परमात्मा ही सब कुछ हैं। वे यज्ञ में दी जानेवाली हवि भी हैं।

उन यज्ञ की हविरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६९९ –

ॐ सद्गतये नमः

सुन्दर ज्ञानवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Omniscient.

सती गतिः बुद्धिः समुत्कृष्टा अस्य इति सद्गतिः। अर्थात् उनकी गति यानी बुद्धि श्रेष्ठ है, इसलिए वे सद्गति हैं। सृष्टि को बनानेवाले सृष्टा सृष्टि के सम्पूर्ण ज्ञान से युक्त होने चाहिए। परमात्मा सृष्टि, स्थिति और प्रलय के सम्पूर्ण ज्ञान से युक्त है। परमात्मा वह ज्ञान की निधि हैं, जिन्होंने न केवल सृष्टि को बनाया हैं, किन्तु सृष्टि में जितना भी ज्ञान है, वह उनका लेशमात्र है। इसलिए वे उत्कृष्ट ज्ञानवाले सद्गतिरूप हैं। उन श्रेष्ठ ज्ञानवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ७०० –

ॐ सत्कृतये नमः

सुन्दर कृति करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Virtuous Actions.

सती कृतिः जगद्–रक्षणलक्षणा अस्य यस्मात् तेन सत्कृतिः। अर्थात् जगद् की उत्पत्ति आदि भगवान् की कृति श्रेष्ठ है, इसलिए वे सत्कृति हैं। जगत स्वयं परमात्मा का सृजन है। इसमें अद्भुत व्यवस्था, सुन्दरता और संवादिता दीखती है। परमात्मा द्वारा किए गए विनाश में भी सृजन निहित होता है। ऐसी सुन्दर सृजनात्मकता से युक्त सृष्टि के कर्ता होने से वे सत्कृति हैं। उन सुन्दर कृति के करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।